शोध पत्र- हिन्दी

Dec.-09—Jan.-2010

मंच पर अब सुविधा नहीं हैं।
नेपथ्य में ही काली संभवानाएँ है।

* डॉ. रंजना भालेराव

*डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर कला व वाणिज्य महाविद्यालय नागसेनव, औरंगाबाद

हिंदी की प्रसिध्द एवं गंभीर तथा संवेदनशील नाटककार सुश्री मीरा कांत की सोच का केंद्रीय बिंदू भी यही है। और "देशकाल चाहे कोई भी हो, बुध्दिमती - विदूषी स्त्री को पुरुष समाज कभी बर्दाश्त नही कर पाता। ... आज के आक्रामक स्त्री विमर्श - व्यवहार और स्वच्छंदतादायी आधुनिकता या उत्तर आधुनिकता के बावजूद बुनियादी स्थिती में कोई मूलभूत अंतर नही आया है। हाँ समयानुसार पुरुष द्वारा स्त्री को अपने हक में इस्तेमाल करने के तरीके और तेवर जरुर कुछ बदल गए है।[१]"

इसी बात को अभिव्यक्त करने की कोशिश 'नेपथ्य राग' नाटक में मीरा कांत ने की है। 'नेपथ्य राग' प्रतीकात्मक नाटक है। नाटक में पौराणिक तथा इतिहास कथा का संदर्भ लेकर आधुनिक युग की समस्या को उद्‌घाटीत किया गया है। पौराणिक तथा इतिहास काल में स्त्री को जिन- जिन समस्याओं का सामना करना पडा है, वही पर आज भी इस आधुनिक यूग में स्त्री को इन्ही समस्योओं से जुझना पड रहा है। उसे ही अपने काम पीछे लेने होते है। स्त्री को अपने अधिकोरों से वंचित रहना ही उसकी मलाई मानी गई है। पुरुष वर्ग के कारण स्त्री अपने कला गुणों का विकास न कर पाने के कारण अपने खोये अस्तित्व की तलाश में भटकती नजर आती है।

आज स्त्री के सौंदर्य का प्रदर्शन होता है। उसे यही समाज एहसास दिलाता है कि वह शोभा की ही वस्तू है। और इसके लिए ऐसे वातारवरण और व्यवस्था का निर्माण भी समाज ही करता है। स्त्री को सुंदर क़ोमल, मनोरंजक, माना है।उसके शरिर का प्रदर्शन विविध माध्यमोंद्वारा दिखाकर ऊसके मूल ऊद्देश से ऊसका ध्यान हटा दिया जाता है। यही पूरुष प्रधान संस्कृती का ध्येय रहा है। स्त्री को वस्तू से व्यक्ती और व्यक्ती से पूनः वस्तू बनाया जा रहा है। इसी रुप को 'नेपथ्यराग' में प्रस्तूत किया है गया है। इसीलिए इस नाटक के संदर्भ में कहाँ गया है। "यह नाटक प्राचिन प्रसंगो में आधुनिक समस्याओं की पडताल का प्रयास है।"[२] मीराकांत आधुनिक यूग की चर्चित लेखिका है। इनके नाटको के विषय अलग तथा नाटकों में अभिव्यक्त समस्याओं के विषय रुप देखे जा सकते है। इनके कुछ चर्चित नाटकों में 'नेपथ्य राग', भूवनेश्वर दर भूवनेश्वर, कंधे पर बैठा या थाप (श्रूयते न तू दृश्यते), काली बर्फ, मेघ प्रश्न आदि हैं। इनकी कहानियॉ भी आज के समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है। इनमे हाइकन, कागजी बुर्जे आदि कहानी संग्रह है। इनके ऊपन्यास, बालसाहित्य, कविताएँ भी प्रसिध्द है।

'नेपथ्य राग' में पौराणिक कथा का संदर्भ लेकर आधुनिक यूग की स्त्री समस्या को व्यक्त किया गया है। नाटक की शरुआत आधुनिक यूग की 'मेघा' जो आधूनिक शिक्षा, विचारप्रणाली तथा उच्चपद की अधिकारी है। परंतू मेधा जिस कार्यालय में काम करती है, वहाँ पूरुष प्रधान संस्कृति के लोगों की मानसिकता के कारण लोग मेधा के काम में सहयोग नहीं देते। जिससे मेधा को अनेक कठिनाइओं का सामना करता पडता है। इस समस्या को वह अपने माँ को बताती है। माँ भी मेधा की इस समस्या को साधारण मानते हूए स्त्री को हमेशा से ही ऐसी स्थितियों का सामना करना पडता है यही जतलाती है।

प्राचीन युवा में भी ऐसा ही होता रहा और आज भी वही हो रहा है। बदल रही है तो सिर्फ परिस्थिती। इस समस्या को स्पष्ट करने के लिए मॉ, मेधा को पौराणिक काल की चौथी - पॉचवी शताब्दी के समय की एक ऐसी स्त्री कहानी बताती है, जो अपने कलाज्ञान, विशेष रचिवाले विषय ज्योतिषज्ञान को पूर्ण करने की इच्छा. लेकर नगर मे आती है। जो बुद्धिमान, विनम्र तेजस्वी रुप और आत्मविश्वास की मुर्ती है। अपने ज्योतिषज्ञान को समाज के सामने लाने का प्रयत्न करती है। तो वही पुरुष समाज उसे नेपथ्य में रहने के लिए विवश कर देता है। वह ऐसी स्त्री है, जो पूरुष समाज के विरोध में संघर्ष करती है। वह ऐसी स्त्री है, खना। 'खना' इस नाटक का मुख्य स्त्री पात्र है। उसे ज्योतिष विद्या

का ज्ञान प्राप्त है । जो बहूत चर्चित थी । खना बहूत प्रतिभावन स्त्री थी । खना के ज्योतिष के संबंधी वचन आज भी उतने ही प्रचलित है, जितने पहले थें । खना की एक ही इच्छा है कि, वह अपने ज्ञान को और आगे बढाने लिए वराह मिहिर से शिक्षा ग्रहण करना चाहती है ।खना के सुबन्धू काका के कारण उसकी यह इच्छा पूर्ण होती है । वराह मिहिर के पहली मुलाकात में ही ऊसके ज्ञान से प्रभावित होते है। ऊसे शिब्या की दीक्षा देते है । खना की रुचि तथा ज्ञान प्राप्त करने की वृत्ती उसे और भी विद्वान बनने मे मदगार साबीत होती है ।

गुरुकूल में खना की शिक्षा चल रही है । खना के साथा वराह मिहिर के पूत्र पृथुयशस भी है, जो बहुत उदीयमान ज्योतिषाचार्य - सुदर्शन तथा प्रभावशाली व्यक्तीत्व है । यही पृथूयशस खना के सौदर्य , प्रभावी व्यक्तीत्व तथा आत्म विश्वास को देखकर आकर्षित होते है । और उससे विवाह करने की इच्छा अपने पिता वराह मिहिर से कहते है परंतु की वराह मिहिर इस विवाह का विरोध करते है। उनका मानना है कि, खना अपने पूत्र से भी ज्ञानी है । उसकी विद्वत्ता उसे आगे बढाएगी । वही दुसरी ओर पृथूयशस जो परंपरावादी और मर्यादावादी है । वह खना के प्रगती को बर्दास्त नहीं कर सकेगा । इसी कारण वे इस विवाह का विरोध करते है । और अपने पूत्र से कहते है ।

''गृहस्थ शास्त्रार्थ न भी सही परंतू ... तुम दोनों एक ही मार्ग के पथिक हो । ऊसे ऊसी मार्ग पर अपने से आगे निकलता देखनो का .... साहस जुटा पाओंगे ? जानते हो उसके गृह.. [३]'' वराह निहिर ने खना को शिष्या के रुप में स्वीकार किया है । परंतू उसे पूत्रवधू के रुप स्वीकार करना कठिण है । क्योंकी उसकी विद्वता की प्रगति को देखने की मानसिकता पुरुष संस्कृती में नही है । जो सहन करना उनके नियमों के विरुध्द है । परंतू पुत्रहठ के सामने उन्हे झुकना पडता है । अब ऊन्हे चिंता है भविष्यकाल की आगे क्या होगा ? वे कहते है –

''निस्संदेह... चिंता तो अब मेरी हूई । ''[४] आखिर में पृथूयशस और खना का विवाह होता है । परंतू विवाह होते के बाद ऊन्हे तुरंत विक्रमादित्य के आदेशापूसार ऊज्जथिनी जाना होता है ।क्योंकी उनपर महत्त्वपूर्ण काम की जिम्मेदारी है। ऊन्हे अपने पत्नी के साथ कम समय होने का दु:ख भी है । खना अपने पति पृथूयशस की जिम्मेदारी को समझकर ऊसे कर्तव्य निभाने की प्रेरणा देती है । खना अपने ससूर वराह मिहिर की सेवा बहूत मन लगाकर करती है। वराह मिहिर और खना एक साथ एक छत के निचे रहते हुए भी ऊनमें शिक्षा संबंधी प्राप्त चर्चा नहीं हो पाती । अपने ज्ञान विषय की चर्चा करने में संकोच करती है । अपने ससूर से कुछ कहने था बताने में ऊसके मन में एक भयसा लगता है। एक दिन अचानक वराह मिहिर के पास निर्धन पूरुष का रुप धारण कर महाराज विक्रमादित्य आते है । वे वराह मिहिर से गौड राज्य की समस्या का हल जानना चाहते है । परंतू उसी समय खना उस राज्य का भविष्य बताती है । जो बाद में सत्य होता है । इस भविष्य वचन के सत्य होने से महाराज के मन में ऊसका स्थान आदरणीय हो जाता है । महाराज विक्रमादित्य खना के प्रभावी बुध्दिमत्ता, कुशल व्यक्तीत्व तथा उसकी अंर्तवृष्टी के कारण उससे प्रभावित होते है । अपने पत्नी राणी महादेवी, से भी इसकी, चर्चा करते है । राणी महादेवी की खना से भेट होती है तब उन्हे भी उसके कुशाग्र बुध्दिमत्ता की झलक दिखाई देती है । दोनों में पुरुष स्त्री संबंधो की चर्चा होती है । राणी महादेवी पुरुष की महत्ता को स्वीकार कर स्त्री को निम्न दर्जा देती है । परंतु खना इसके विरोध में है । पुरुष प्रधान संस्कृती के बारे में वह कहती है । –

''महाराज भर्तृहरी ने तो सन्यास ले लिया क्योंकि उनकी महारानी एकनिष्ठ नही थी परंतू कभी कोई स्त्री यदि ऐसा अनूभव करे कि ऊसका पति उससे नही किसी और से प्रेम करता है तो .. तो कहा जाता है पत्नी असाहिष्णू है .. उसमें धैर्य नहीं । क्या .. ''[५] ''क्या समाज उस स्त्री को इस आधार पर सन्यास लेने की अनुमति देगा? क्या यही समाज ऊसे गृहस्थ की दोहरी पार करने देगा? '' [६] स्त्री- पुरुष समानता की चर्चा में स्त्री ने हमेशा हार मानी है । पाराणिक काल में यही हुआ है और आज भी यही हो रहा । खना आधूनिक विचारोवाली पौराणिक पात्र है । पुरुष समाज में अधिकार और हक्क के साथ जीवन जीता है ? क्या स्त्री भी ऊसी अधिकार और हक्क के साथ जीती है ? यह प्रश्न भी खना ने उठाया है ? खना के अध्ययन चिंतन, अंर्तदृष्टी को देखने के बाद महाराज विक्रमादित्य एक निर्माण लेते है, जो इतिहास में पहली बार हुआ होगा । वह निर्णय , खना को राजसभा के नवरत्नों में एक सभासद पद पर आसिन करने का। ज़िसका स्वागत शायद किसी ने भी नहीं किया ।

महाराज विक्रमादित्य एक निर्णय लेते है जो इतिहास में पहली बार हुआ होगा। वह निर्णय खना को राजसभा के नवरत्नों में एक सभासद पद पर आसीन करने का। जिसका स्वागत शायद किसी ने भी नहीं किया । महाराज विक्रमादित्य अपने नवरत्नों के संकुचित विचारोतथा संकुचित मानसिकता तथा जनसामान्य की चिंता की ओर ध्यान न देने के कारण ऊनको यह निर्णय लेना पडा । उन्हे लगा की खना जैसी विद्वान पंडित स्त्री का होना सभा में आवश्यक है । राज्यसभा मे स्त्री के सभासद होने पर चर्चा होती है। चर्चा में स्त्री की विद्वता एवं ऊसके पंडित्य पर व्यंग किया गया है । उसे वस्तुरुप में मानने की मानसिकता का यहाँ ऊद्घाटन हूआ है। इसको व्यक्त करते हूए घटखर्पर कहते है । ''हाँ- हाँ व्यक्तिगत रुप से आपको क्यो आपत्ती होगी

– स्त्री विषयक आपके उदार विचार को सभी जानते है। –– आप ही ने तो लिखा है – ब्राम्हण पैर से पवित्र है, गौएँ पृष्ठ से , छाग आहर घोडे मुख से परंतू स्त्रियाँ तो सब अंगो से पवित्र है ।"[७] स्त्री को सौंदर्य की वस्तू मानकर वर ह्रचि कहते है । "स्त्री रत्न की सृष्टी तो स्वयं ब्रम्हा ने की है । स्त्रिया रत्न की शोभा बढाती है । किसी स्त्री के राजसभा में आने से संभवत हम रत्नो की कांति भी बढ जाए ।"[८]

इसतरह वार्तालाप होने के बाद विक्रमादित्य हताश होते है । अपने सभासद गण से स्त्री सभासद का विरोध होना उन्हे नाराज कर देता है । स्त्री सभासद होने का निर्णय एकम तु न होने कारण वे निराश होते है । वे कहते है । "ज्ञान विज्ञान, साहित्य और कला के मर्मज्ञ गूणीजनों की उदार दृष्टी यदि इस बिंदू पर आकर कुंठित हो रही है तो सर्वसाधारण इस आधी जनसंख्या के बारे मे क्या सोच पाएगा ।"[९] वही दुसरी ओर खना अपने ज्ञान की वृध्दी तथा 'स्व' के अस्तित्व के प्रति सजग होकर सभासद होने की सन्मति सुबधन्धू काका से दर्शाती है । अपने ससूर वराह मिहिर से इस बारें में चर्चा करती ।

परंतु वराह मिहिर उस बारे में कूछ उत्तर नहीं देते । एक स्त्री का पुरुष के आगे जाना तथा उसके साथ बैठकर काम करना उनकी संस्कृति के विरुध्द है । अपने बुध्दी से वे स्त्री को बहुत बडा मानते है, ऊन्हे शिक्षा देते है । परंतू मानसिक ह्रप से ऊसके प्रगति को बाधा मानते है । अपने बौध्दिक सिध्दांतो से स्त्री के विकास के बारे में सोचते है । परंतु हमारे पंरपरावादी, संस्कृतिविह्रध्द विचार हमें रोक देते है । इसी संदर्भ में वराह मिहिर कते है। "हम बुध्दी से सिध्दांतो की रचना करते है किंतु ह्रदय से हम केवल संस्कारों से बँधे रहते है।"[१०] राजसभा से हताश वराह मिहिर का घर में प्रवेश होता है । जिस तरह मन में तुफान उठा है, ऊसीतरह प्रकृति भी उसी का साथ दे रही है । प्रकृति भी अपनी मुक सम्मति देकर तूफान आने का संकेत दे रही है। वराह मिहिर के प्रवेश होते ही अंधेरे में दिया लिये खना आती है। राजसभा के बारे में पुछती है । वराह मिहिर उसे बताते है कि, राजसभा में स्त्री सभासद तो चाहिए परंतु वह स्त्री जिव्हाविहिन चाहिए । यह बात सूनने के बाद खना अत्यंत दु:खीत होती है । अपने 'स्व' और 'स्वत्व' की पहचार उसे न जाने कब प्राप्त होगी? कितने दिन, वर्ष, युग इसी प्रतिक्षा में बीत जाएंगे पता नही । इसी बात को व्यक्त करते हुए खना कहती है । "स्त्री सभासद– पिताश्री आप तो व्यर्थ ही चिंतित है। श्रावण क्या यह तो आषाढ से भी पहले के मेघ है। बरसेंगे नही ।

आषाढ अभी नहीं आया– नहीं आया । – आषाढ आने मे कई संवत्सर बीत जाएँगे – कई यूग यह नेपथ्य है – इसे मंचतक पहूँचने में समय लगेगा – कल्पान्त – कई यूग ..." "श्रावण क्या अभी तो आषाढ भी नही हैं – पूर्वाषाढ हैं – यह नेपथ्य है – नेपथ्य । "[११] आज भी स्त्री को अपने जीवन में सफल तथा उच्चपद आसीन होने के लिए संघर्ष करना पडा है । पौराणिक काल में भी स्त्री को उसके ज्ञान को कही न कही छुपाया गया है उसका दमन किया गया है । इसे पुरुष प्रधान संस्कृति ने षडयंत्र रचकर असफल बनाया है । स्त्री संघर्ष को लेकर 'नेपथ्य राग' नाटक प्रतिकात्मक रुप से सामने आता है । इसके बारे में चर्चा करते हुए - " महिलाओं की पहचान का संघर्ष है 'नेपथ्य राग ।"[१२] आज भी समान अधिकार पाने के लिए भी उसे समस्याओं का सामना करना पडता है । स्त्री अगर आगे बढे तो उसे कही न कही कम होने का एहसास दिलाया जाता है । उसके आसपास षडयंत्र रचे जाते है । ज़िससे वह कार्य से दूर हो जाए । और समाज के सामने कभी न आए । उसको नेपथ्य के पिछे रहना ही उचित है ।नेपथ्य के सामने आने के बाद उसके साथ क्या हो सकता है, इसका चित्रण पौरारिक तथा आधुनिक दोनों युग में शायद समान ही होगा। आज की पूरुष प्रधान संस्कृति का पुरुष स्त्री को नेपथ्य में रखना चाहता है । और इसलिए उसे बार- बार जतलाता रहा है ।

"मंच पर अब सुविधा नहीं है
नेपथ्य में ही काफी सभवनाएँ है। "

सन्दर्भ ग्रन्थ

१) जयदेव तनेजा - रंग प्रसंग जुलाई- सिंतबर - २००७ २) नवभारत टाईम्स - ६ फरवरी २००५ ३) मीराकांत - नेपथ्य राग - पृष्ठ नं. २१ ४) वही - पृष्ठ नं.- २२ ५) वही - पृष्ठ नं. - ४६ ६) वही - पृष्ठ नं. -४७ ७) वही - पृष्ठ नं. - ५६ ८) वही - पृष्ठ नं. - ५६ ९) वही - पृष्ठ नं. - ५७ १०) वही - पृष्ठ नं. - ५९ ११) वही - पृष्ठ नं. -६१ १२) नवभारत टाईम्स - ३ अक्टुबर २००३